-

हिन्दी महोत्सव 2017

इन्द्रप्रस्थ महिला महाविद्यालय तथा वाणी फ़ाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वाधान में दो दिवसीय 'हिन्दी महोत्सव' का आयोजन 3-4 मार्च 2017 को इन्द्रप्रस्थ कॉलेज के प्रांगण में किया गया । इस महोत्सव में भाषा, साहित्य, रंगमंच और मीडिया से सम्बन्धित विविध विषयों पर परिचर्चा एवं सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिनमें देशभर के प्रख्यात विद्वान और साहित्यकारों के अलावा कला, संगीत व संस्कृति जगत की प्रसिद्ध हस्तियों ने भी हिस्सा लिया। इस महोत्सव का उद्देश्य हिन्दी भाषा के सौन्दर्य, भाषाई धरोहर को सहेजना व उसके बदलते स्वरूप का प्रदर्शन करना और साथ ही हिंदी में छात्रों के लिए नए व्यावसायिक क्षितिज से उनकी पहचान कराना था।

इसका उद्घाटन इन्द्रप्रस्थ कॉलेज के विशाल सभागार में हुआ। वाणी फ़ाउंडेशन के चेयरमैन अरुण माहेश्वरी, इंद्रप्रस्थ कॉलेज की प्राचार्या डॉ. बाबली मोइत्रा सराफ़, उप-प्राचार्या डॉ. नलिनी डेका, वाणी फ़ाउंडेशन की ट्रस्टी अदिति माहेश्वरी गोयल और हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. रेखा उप्रेती ने दीप प्रज्ज्वलित कर हिन्दी महोत्सव का विधिवत उद्घाटन किया। इस अवसर पर कॉलेज की प्राचार्या ने अपने सम्बोधन में कहा कि कॉलेज में भाषा प्रधान गतिविधियों की श्रृंखला में यह एक महत्त्वपूर्ण कड़ी है और मैं आशा करती हूँ कि इन्द्रप्रस्थ कॉलेज और वाणी फ़ाउंडेशन का यह सम्बन्ध बहुआयामी होगा तथा साहित्य और भाषा की दुनिया में नये कीर्तिमान स्थापित करेगा।
उद्घाटन के बाद 10:00 बजे प्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना रचना यादव ने अपनी काव्यात्मक कत्थक प्रस्तुति '**समवेत**' से हिन्दी महोत्सव के आरम्भ को एक भव्य रूप दिया। इस कत्थक प्रस्तुति के बाद कॉलेज परिसर में विभिन्न सत्रों के कार्यक्रम शुरू हुए।

हिंदुस्तानी भाषा पर आधारित '**जबानी ज़ायका**' सत्र की शुरुआत करते हुए निष्ठा गौतम ने उर्दू और हिन्दी के संबंध का उल्लेख किया। सुकृता पॉल ने कहा कि दरअसल अभी तक हमलोग पितृसत्ता की छाया से बाहर नहीं निकले हैं। अभी तक उससे घिरे हैं जिसका असर हमारे भाषाई रिश्तों पर भी पड़ा है। सैफ महमूद ने बड़े ही रोचक अंदाज में उर्दू और हिन्दी की साझी खूबियों पर चर्चा की और श्रोताओं का दिल जीत लिया। इस सत्र का संचालन इन्द्रप्रस्थ कॉलेज के हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. हर्षबाला शर्मा ने किया।
दूसरा सत्र भारतीय भाषाओ में राजनैतिक विमर्श पर आधारित था।इस सत्र में बातचीत की शुरुआत की 'वोटर माता की जय!' की युवा लेखिका प्रतिष्ठा सिंह ने। उन्होंने हमारी भाषा में राजनीतिक विमर्श की प्रवृत्तियों पर ध्यान दिलाया। अभय कुमार दुबे ने बताया कि सामान्य राजनीतिक विमर्श अपनी सामान्य भाषा में ही होता है लेकिन अकादमिक या शोध के लिए जो राजनीतिक विमर्श होता है उस पर अंग्रेज़ी का विशेष दबाव होता है। आदित्य निगम ने बातचीत को आगे बढ़ाते हुए कहा कि राजनीति के क्षेत्र में शोध की दृष्टि से देखें तो हिन्दी भाषा वालों को समुचित पाठ्य सामग्री अभी भी उपलब्ध नहीं हो पाती है। परिचर्चा के अन्त में राहुल देव ने कहा कि हिन्दी में राजनीतिक विमर्श संभव है और यह होता है।इस सत्र का संचालन इन्द्रप्रस्थ कॉलेज की अध्यापिका डा.विभा कुमारी ने किया।
अगला सत्र '**युवा लेखन की चाह**' विद्यार्थियों में विशेष लोकप्रिय रहा जिसका संचालन डा. रिम्पी खिल्लन ने किया। इस सत्र में विनीत बंसल ने कहा कि मैं लेखक नहीं हूँ, मैं आम नजरिए से चीजों को देखता और समझता हूँ। इसी तरह लल्लनटॉप टीम की प्रतीक्षा पांडे और 'पतनशील पत्नियों के नोट्स' की लेखिका नीलिमा चौहान ने भी स्त्री के स्पेस को लेकर कहा कि स्पेस बनाना पड़ता है और यह लड़ाई आसान नहीं है।युवा लेखक अविनाश मिश्र ने उन स्त्रियों की बात की जिनकी पहुँच सोशल मीडिया तक नहीं है। कुल मिलाकर यह एक लोकप्रिय और विचारोत्तेजक सत्र रहा। इसके समानांतर ही 'संगीत अंतरध्वनियाँ: लोक ले शास्त्र तक' के सत्र में यतीन्द्र मिश्र और विद्या सिन्हा के साथ विनीता सिन्हा का रोचक संवाद हुआ जिसमें लोक ले जुड़े गीत एंव संगीत के महत्व को रेखांकित किया गया।इसका संचालन डा.अमिता पांडे मे किया।
भोजनावकाश के बाद आरम्भ होने वाले सत्र **हिन्दी भाषा शिक्षण : चुनौतियाँ और प्रविधियाँ** में डॉ.

हर्षबाला शर्मा ने कई प्रश्नों के साथ परिचर्चा की शुरुआत की और शिक्षण-प्रविधि पर विशेष ध्यान आकृष्ट किया। कृष्ण कुमार ने बात शुरू करते हुए कहा कि कोई समस्या चुनौती तभी बनती है जब उसे महसूस करने वाला कोई भाव उत्पन्न हो। किस तरह से आज हिन्दी का महिमा मंडन हो रहा है और शिक्षकों में शिक्षण कैसे करें इस बात को लेकर अपूर्वानंद ने उच्चतर कक्षाओं में हिन्दी के अध्ययन-अध्यापन की चर्चा की और इसे सकारात्मक दिशा देने की ओर ध्यान दिलाया। इसी के समानान्तर **हिन्दी के इमोजी : हिमोजी** पर अपराजिता शर्मा ने अपना वक्तव्य दिया और तकनीक की नई दुनिया से साक्षात्कार काराया।
दलित आंदोलन की सैद्धांतिकी सत्र में मुख्य वक्ता श्यौराज सिंह बेचैन ने बातचीत आरम्भ की। उन्होने कहा कि यों तो दलित आंदोलन में अंबेडकर की भूमिका मानी जाती है लेकिन वे अंग्रेजी राज की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इसके बाद **कहानी अपने शहरों की** में अनु सिंह चौधरी के साथ इरा पांडे, पुशपेश पंत और यतीन्द्र मिश्र ने अपने शहरों की यादों को साझा किया।

हिन्दी और विदेशी भाषा : संवाद और अनुवाद सत्र में अनुवाद के विविध पहलुओं पर चर्चा-परिचर्चा हुई। इस सत्र में आई. पी. कॉलेज की प्राचार्या डॉ. बाबली मोइत्रा सराफ़, नॉर्वेजियन दूतावास की मनु आर्या, फ्रेंच बुक ऑफिस के निकोला इडियर और वाणी फ़ाउंडेशन की अदिति माहेश्वरी गोयल ने अनुवाद के विविध आयामों पर संवाद किया।

अशोक चक्रधर ने **कविता की बात कर चंपू** सत्र में बोलते हुए कहा कि आज सोशल मीडिया ने कवि कर्म को आसान बना दिया है। उन्होंने कहा कि जो कल्पना कर सकता वही कवि हो सकता है। भाषाओं की समावेशी प्रकृति पर भी उन्होंने प्रकाश डाला। इसी के साथ दैनिक जागरण के वरिष्ट संपादक मनोज झा द्वारा मिडिया पर वर्कशाप कराया तथा रस सिद्धान्त पर प्रचंड प्रवीर के साथ मास्टर क्लास का आयोजन किया गया।

महोत्सव का दूसरा दिन **कविता उत्सव** से आरम्भ हुआ। कॉलेज के कॉन्फ्रेंस रूम में आयोजित कविता उत्सव में विपिन चौधरी, सविता सिंह, उदय प्रकाश, अनामिका, मंगलेश डबराल और गगन गिल ने अपनी कविताओं पाठ किया। हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका डॉ. रेखा सेठी ने कार्यक्रम का संचालन किया। शुरुआत करते हुए सबसे पहले विपिन चौधरी ने 'दस्यु-सुन्दरी, 'ज्यादातर मैं सत्तर के दशक में रहा करती हूँ', 'पुरानी यादें' और 'पीछे छूटा हुआ प्रेम' कविताओं का पाठ किया जिनमें स्मृतियों की टीस और दुखते रग का भाव प्रमुख था। सविता सिंह ने अपनी एक प्रसिद्ध कविता 'रात, नींद और स्त्री' सुनाई और कहा कि इस कविता ने हज़ार कविताओं को जन्म दिया है। उदय प्रकाश ने हिन्दी को फोकस करते हुए 'एक भाषा हुआ करती है' कविता का पाठ किया। हिन्दी के मूर्धन्य कवियों के इस काव्य पाठ कार्यक्रम में कॉलेज की छात्राओं के साथ-साथ भारी संख्या में साहित्य प्रेमी उपस्थित थे।

11:15 से आरम्भ होने वाले सत्र **प्रकाशन के नये आयाम** में मीरा जौहरी (राजपाल एंड संस), अलिंद माहेश्वरी (राजकमल प्रकाशन), नीता गुप्ता (यात्रा बुक्स), शैसे लेश भरतवासी (हिन्दी युग्म) और अदिति माहेश्वरी-गोयल (वाणी प्रकाशन) के बीच प्रकाशन जगत से जुड़े मुद्दों पर संवाद हुआ।

हिन्दी हिन्दी कितनी बिन्दी सत्र में सुधीश पचौरी, हरीश त्रिवेदी, उदय प्रकाश, डॉ. अन्विता अब्बी और प्रियदर्शन के बीच हिन्दी की वर्तमान दिशा और दशा पर काफी विचारोत्तेजक बातचीत हुई। इस सत्र के तुरंत बाद एक विशेष आयोजन में वाणी प्रकाशन के सीनियर प्रूफ संपादक श्री विनोद भारद्वाज को लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड दिया गया। दस्तावेजी सिनेमा पर **संजय जोशी की मास्टरक्लास** में काफी मुद्दे उभर कर सामने आए। लेखन में विचारधारा जरूरी या विचार सत्र में श्याम किशोर सहाय, अनंत विजय, वर्तिका नंदा और भगवानदास मोरवाल के बीच संवाद हुआ।

इसी के साथ-साथ अनुवाद एवं अनुवाद अध्ययन केन्द्र में 'आई टू हैड ए लव स्टोरी' के लेखक **रविन्दर सिंह से एक मुलाकात** का आयोजन किया गया। इस सत्र में लेखक से बातचीत में छात्राओं ने काफी

उत्साहपूर्वक भाग लिया और सवाल-जबाव से पूरे कार्यक्रम के दौरान एक गहमागहमी बनी रही।

हज़ारों ख्वाहिशें ऐसी सत्र में मशहूर फिल्मकार सुधीर मिश्रा ने अजित राय से बात की। अपनी बातचीत में उन्होंने बताया कि जीवन का हर अनुभव हमें कुछ न कुछ सिखाता है। हर किसी के पास अपनी बात कहने का तरीका होना चाहिए। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़े कई संस्मरणो को भी साझा किदूसर

भोजन के बाद कॉन्फ्रेंस रूम में आरम्भ होने वाले सत्र **मीडिया भाषा का सामाजिक खाका** में सरला माहेश्वरी, श्याम किशोर सहाय, वर्तिका नंदा के साथ ऋचा अनिरुद्ध ने बातचीत की। इस सत्र में मीडिया लेखन और उसके सामाजिक सरोकारों पर बातचीत हुई। इसी के समानान्तर अस्मिता थिएटर ग्रुप के अरविंद गौड़ ने अपने मास्टरक्लास में छात्र-छात्राओं को रंगमंच के गुर सिखलाये।

गुनाहगार औरतें सत्र में सबसे पहले प्रतीक्षा पाण्डेय ने साहित्य में पुरस्कार देने की प्रक्रिया के बारे में सवाल उठाया और कहा कि जितना बड़ा अवार्ड होता है उसमें मर्दों की संख्या उतनी ज्यादा होती है, औरतों की संख्या बहुत कम होती है। अनामिका जी ने इसी बात को आगे बढ़ाया और कहा कि आज औरतों और मर्दों के बीच प्रतियोगिता की भावना की जगह दोस्ताना व्यवहार देखने को मिलता है जो बहुत अच्छी बात है। स्मिता परिख ने सभागार में बैठे श्रोताओं को ये सन्देश दिया कि समाज में जो नकारात्मक चीजें हो रही हैं उनपर हमें ध्यान नहीं देकर अपने लक्ष्यों पर ध्यान देना चाहिए। गीताश्री ने अपने पत्रकारिता के अनुभवों को शेयर करते हुए बताया कि इस क्षेत्र में जब लडकियाँ जाती हैं तो क्या-क्या समस्याएँ आती हैं। उन्हें केवल फ़िल्म जगत, कला और ग्लैमर को कवर करने का मौका दिया है। गीताश्री ने कहा कि स्त्री के एकांत का कोई सहचर नहीं होता लेकिन अनामिका जी ने जोड़ा कि भाषा ही स्त्री के एकांत का सहचर बन गया है।

क़त्ल की क़िस्सागोई सत्र में क्राइम राइटिंग के मूर्धन्य लेखक सुरेन्द्र मोहन पाठक और प्रभात रंजन के बीच बात हुई। मेरे कम-से-कम हज़ार-दस हज़ार तो पाठक तो हैं ही और यही मेरी लाइब्रेरी ।मैं व्यवसाय के लिए लिखता हूँ और सोते-जागते, उठते-बैठते क्राइम राइटिंग के बारे में ही सोचता हूँ।

गुड गर्ल शो सत्र में अनु सिंह चौधरी ने यह बताया कि वास्तव में गुड गर्ल शो एक वेब सीरीज है जो 6 मार्च को रिलीज होने जा रहा है। यह शो चार लड़कियों की कहानी है जो चार अलग-अलग शहरों से हैं और एक पीजी में रहती हैं और अपने कॉलेज के अनुभवों को शेयर करती हैं। भोजन के बाद सुधीश पचौरी, डॉ. बाबली मोइत्रा सराफ़ और अनंत विजय ने प्रतिष्ठा सिंह की पुस्तक 'वोटर माता की जय!' का लोकार्पण किया और उसपर बातचीत भी की। इस बीच कॉलेज में कविता प्रतियोगिता और आशु लेखन प्रतियोगिता का अभी आयोजन हुआ।

शाम 4 बजे इन्द्रप्रस्थ कॉलेज के विशाल सभागार में निजामी बंधु की यादगार कव्वाली प्रस्तुति से हिन्दी महोत्सव का समापन हुआ।